The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्यों के विकास में स्वामी विवेकानंद एवं श्रीराम शर्मा आचार्य के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

रमाशंकर
शोध छात्र,
शिक्षा संकाय,
राम डॉ. मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय,
अयोध्या।

डॉ. सन्तोष कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षा संकाय
आर.आर. पी.जी. कॉलेज, अमेठी।

सारांश –

मानवीय मूल्य वे मानवीय मान, लक्ष्य या आदर्श हैं जिनके आधार पर विभिन्न मानवीय परिस्थितियों तथा विषयों का मूल्यांकन किया जाता है। वे मूल्य व्यक्ति के लिए कुछ अर्थ रखते हैं और उन्हें व्यक्ति अपने सामाजिक जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण समझते हैं। इन मूल्यों का एक सामाजिक–सांस्कृतिक आधार या पृष्ठिभूमि होती है, इसीलिए प्रत्येक समाज के मूल्यों में हमें भिन्नता मिलती है। मूल्यों के द्वारा सभी प्रकार का मूल्यांकन किया जा सकता है, चाहे वे भावनाएँ हो या विचार, क्रिया, गुण, वस्तु, व्यक्ति, समूह, लक्ष्य या साधन।

वर्तमान समय में मूल्यों के विकास की बात करें तो हमारे सम्मुख शिक्षा जगत के दो विचारक प्रकट होते हैं। इनमें पहले विचारक स्वामी विवेकानंद है एवं दूसरे विचारक श्रीराम शर्मा आचार्य हैं। इन दोनों विचारकों की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि इन दोनों ने भारतीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षा व्यवस्था को संचालित करने की सलाह दी है। यदि हम अपने समाज को संगठित रूप देना चाहते हैं या उसे सन्मार्ग पर लाना चाहते हैं तो ऐसी परिस्थिति में हमें स्वामी विवेकानंद एवं श्रीराम शर्मा आचार्य के शैक्षिक विचारों में वर्णित दर्शन, मूल्य शिक्षा के शरण में जाना होगा। क्योंकि भारतीय समाज एवं संगठन को ध्यान में रखते हुए हमें जिस प्रकार की शिक्षा चाहिए उसका आधार ही मूल्य शिक्षा है। जहां पर शिक्षा का प्रश्न है तो उसमें मूल्य निर्माण के गुण होने ही चाहिए। यदि मूल्य निर्माण पर गौर किया जाए तो स्वामी विवेकानंद एवं

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य दोनों के ही शिक्षा दर्शन में इसकी प्रचुरता मिलती है। हमें इन दोनों शिक्षा शास्त्रियों के सुझाए हुए मार्ग पर चल कर ही अपनी शिक्षा व्यवस्था में मूल्य को समावेशित करना होगा नहीं तो पश्चिमीकरण के इस दौर में न केवल हमारी शिक्षा व्यवस्था विकृत होगी अपितु इसका सीधा प्रभाव हमारे समाज के संरचना पर भी पड़ेगा तथा हमारा समाज भी विकृत होगा।

21वीं सदी का समाज तथा सामाजिक सरोकार दोनों तेजी से बदल रहा है। यह बदलाव पिछले कुछ सदियों में कम था। लेकिन बीसवीं सदी के अंतिम दशक से इसमें तेजी देखने को मिली तथा 21वीं सदी के पहले एवं दूसरे दशक में यह काफी तेज हो गया। व्यावहारिक तौर पर देखा जाए तो इसका एक कारण वैश्वीकरण को ही बताया जा सकता है जो कि बीसवीं सदी के अंतिम दशक में भारत में प्रारंभ हुआ। इससे भारत में नवीन उपभोक्तावादी संस्कृति एवं भौतिकवादी संस्कृति का विकास हुआ। उपभोक्तावादी संस्कृति या भौतिकवादी संस्कृति ने हमारे समाज में परिवार से लेकर सामाजिक सरोकार तथा शिक्षा सहित उन सभी पक्षों को व्यापक रूप से प्रभावित किया जिससे हमारा समाज जुड़ा हुआ था। भारत में वृहद परिवार तथा संयुक्त परिवार की अवधारणा सदियों से रही है। लेकिन हमारे समाज में यह अवधारणा टूट गई तथा उसकी जगह छोटे तथा एकल परिवार का उदय हुआ। जिसका असर न केवल समाज की संरचना पर पड़ा अपितु इसका अप्रत्यक्ष असर शिक्षा व्यवस्था पर भी पड़ा। क्योंकि परिवार तथा समाज बालक की प्रथम पाठशाला होती है उसी से निकलकर विद्यार्थी विद्यालयों में प्रवेश करता है। ऐसी परिस्थिति में यह देखा गया है कि विद्यार्थियों में मूल्यों की कमी बढ़ती जा रही है। यह मूल्य उनका मानवीय मूल्य है।

मानवीय मूल्य वे मानवीय मान, लक्ष्य या आदर्श हैं जिनके आधार पर विभिन्न मानवीय परिस्थितियों तथा विषयों का मूल्यांकन किया जाता है। वे मूल्य व्यक्ति के लिए कुछ अर्थ रखते हैं और उन्हें व्यक्ति अपने सामाजिक जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण समझते हैं। इन मूल्यों का एक सामाजिक–सांस्कृतिक आधार या पृष्ठिभूमि होती है, इसीलिए प्रत्येक समाज के मूल्यों में हमें भिन्नता मिलती है। मूल्यों के द्वारा सभी प्रकार का मूल्यांकन किया जा सकता है, चाहे वे भावनाएँ हो या विचार, क्रिया, गुण, वस्तु, व्यक्ति, समूह, लक्ष्य या साधन। मूल्यों का एक उद्वेगात्मक आधार होता है। और भी स्पष्ट रूप में, मूल्य समाज के सदस्यों के उद्वेगों को अपील करता है और उन्हीं के भरोसे जीवित रहता है। व्यक्ति जब किसी चीज के विषय में विचार करता है, निर्णय लेता या मूल्यांकन करता है तो उस पर उद्वेग का प्रभाव स्पष्ट रहता है।

यदि हम सामाजिक मूल्य की बात करें तो सामाजिक मूल्य किसी संस्कृति के सारभूत तत्व हैं जो उसकी अभौतिक विशेषताओं को अभिव्यक्त करते हैं। मूल्य समाज में लोगों को यह बताते हैं कि उनके लिये क्या उचित और महत्वपूर्ण है।

प्रत्येक समाज में मावन व्यवहार के संचालन, नियंत्रण एवं निर्देशन के लिए कुछ आदर्श एवं लक्ष्य होते हैं, जिनके प्रति समाज के सभी सदस्य श्रद्धा रखते हैं और उसके अनुकूल अपना व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन व्यतीत करते हैं। ये आदर्श या लक्ष्य एक प्रकार के सामाजिक मानदंड होते हैं जो समाज के सदस्यों को उचित–अनुचित, योग्य– अयोग्य, भला–बुरा, नैतिक–अनैतिक, पाप–पुण्य आदि की व्याख्या करने मे सहायक होते हैं। ये सामाजिक मानदंड सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों व क्रियाओं जैसे परिवार, विवाह, जाति, वर्ग, धर्म, राजनीति, आर्थिक जीवन आदि से सम्बंधित होते हैं। ये मापदंड मनुष्य के ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक तीनों पक्षों से संबंधित कार्यकलापों को वांछित दिशा की ओर निर्देशित करते रहते हैं। इन्हीं सामाजिक मानदंडों को सामाजिक मूल्य कहते हैं। मूल्य वास्तव मे अमूर्त सामान्य अवधारणायें, विचार अथवा मान्यतायें हैं जिन्हें समाज अच्छा और वांछनीय समझता है। आदर्श–नियम व्यवहार व आचरण के दिशा– निर्देश या नियम हैं जो सामाजिक मूल्यों पर आधारित होते हैं। दूसरे शब्दों मे, समाज की इच्छाओं, लक्ष्यों (अर्थात् मूल्यों) जिन्हें समाज उचित, अच्छा और वांछनीय समझता है, के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों मे सामाजिक क्रिया–कलापों को नियंत्रित करने हेतु आदर्श–नियमों का निर्माण होता हैं।

वर्तमान समय में मूल्यों के विकास की बात करें तो हमारे सम्मुख शिक्षा जगत के दो विचारक प्रकट होते हैं। इनमें पहले विचारक स्वामी विवेकानंद है एवं दूसरे विचारक श्रीराम शर्मा आचार्य हैं। इन दोनों विचारकों की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि इन दोनों ने भारतीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षा व्यवस्था को संचालित करने की सलाह दी है। इनके शैक्षिक दर्शन में मानव चरित्र का निर्माण तथा मानव में व्यवहार निर्माण को सबसे अधिक वरीयता दी गई है। स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचार को देखा जाए तो उनके विचार में मानव निर्माण पर सबसे बड़ा बल दिया गया है।

वास्तव में शिक्षा मनुष्य को मानव बनाने की प्रक्रिया है या यह कहा जाये कि मनुष्य को मानव बनाने का दायित्व शिक्षा पर ही है। शिक्षा की व्यवस्थागत प्रक्रिया से निकलकर ही बालक एक वयस्क के रूप में समाज में अपना स्थान और स्तर निर्धारित करता है। व्यक्तित्व और समाज की आवश्यकता के अनुसार बालक को शिक्षित और सभ्य बनाने का अहम कार्य शिक्षा व्यवस्था से ही अपेक्षित होता है। स्वामी विवेकानंद हमेशा से ऐसा विद्यार्थी बनाना चाहते थे जो समाज के लिए उत्तम हो। अतः वे शिक्षा में नैतिक विषय वस्तुओं के समावेश पर अत्यधिक बल

देते थे। विवेकानंद ने जब रामकृष्ण मिशन की स्थापना की तो इसे 1897 में ही उन्होंने अपने विद्यालय व्यवस्था में लागू कर दिया। उनके समस्त शैक्षिक विचार इस विद्यालय से प्रतिबिंबित होते हैं तथा इस विद्यालय में उन्होंने वह सभी तत्व शामिल किए जो कि मानव मूल्य अथवा सामाजिक मूल्य के निर्माण के लिए आवश्यक हैं। वर्तमान समय में यह संस्था उसी रूप में कार्य कर रही है जिस रूप में इसे स्थापित किया गया था।

स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि 'जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, चरित्र गठन कर सकें और विचारों का सामंजस्य कर सकें वही वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है'। मानव निर्माण को शिक्षा का मूल उद्देश्य मानने वाले स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन परम्परागत और आधुनिक शिक्षा प्रणाली का अद्भुत समन्वय है। स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि शिक्षा का मतलब यह नहीं है कि तुम्हारे दिमाग में ऐसी बहुत सी बातें इस तरह ठूँस दी जायँ, जो आपस में, लड़ने लगें और तुम्हारा दिमाग उन्हें जीवन भर में हजम न कर सके। जिस शिक्षा से हम अपना जीवन–निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, चरित्र–गठन कर सकें और विचारों का सामंजस्य कर सकें, वही वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है। यदि तुम पाँच ही भावों को हजम कर तदनुसार जीवन और चरित्र गठित कर सके हो तो तुम्हारी शिक्षा उस आदमी की अपेक्षा बहुत अधिक है, जिसने एक पूरी की पूरी लाइब्रेरी ही कण्ठस्थ कर ली है।

स्वामी जी का विश्वास था कि किसी देश की महानता केवल उनके संसदीय कार्यों से नहीं होती अपितु उसके नागरिकों की महानता से होती है। पर नागरिकों को महान बनाने के लिए उनका नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास परम आवश्यक है। विवेकानंद जी ने चरित्र निर्माण को शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य माना। इसके लिए उन्होंने ब्रह्मचर्य पालन पर बल दिया और बताया कि ब्रह्मचर्य के द्वारा मनुष्य में बौद्धिक तथा आध्यात्मिक शक्तियां विकसित होंगी तथा वह मन, वचन और कर्म से पवित्र बन जाएंगे।

वहीं दूसरी तरफ श्रीराम शर्मा आचार्य की बात की जाए तो श्रीराम शर्मा आचार्य जी के शिक्षा दर्शन में छात्रों के धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, ज्ञान मूल्य, आनंद मूल्य व शक्ति मूल्य, लोकतांत्रिक मूल्य, सौंदर्य, ललित कला मूल्य आदि पर विशेष प्रकाश डाला गया है। श्रीराम शर्मा आचार्य ने शिक्षा को समाज में परिवर्तन का एक साधन माना है। इसके साथ ही बताया कि शिक्षा समाज को दिशा और दशा देती है तो वहीं दूसरी तरफ समाज शिक्षा की दिशा और दशा को निर्धारित करने का कार्य करता है। एक समाज बनाने के लिए मूल्यपरक शिक्षा का होना अति आवश्यक है। जिसमें सभी प्रकार के मूल्य उपस्थित हों।

श्रीराम शर्मा आचार्य का मानना था कि समाज में, परिवार में, मनुष्य के जीवन में जो भी समस्याएँ हैं उनका मूल कारण विचारों में गिरावट है वैचारिक स्तर के निम्न स्तर पर, व्यक्तिगत स्तर पर स्वार्थपरता, महत्वाकांक्षा बढ़ जाती है, परिवारिक स्तर में छोटी–छोटी बातों में कलह होती है और सामाजिक स्तर पर गलत प्रथाएँ व अपराध बढ़ते और विकसित होते हैं। विचार का स्तर गिरने से नकारात्मकता का सहज रूप से प्रवेश होता है और फिर तरह–तरह की मानसिक समस्याएं भी पैदा होती हैं। आज मनुष्य कई तरह की समस्याओं से जूझ रहा है और नित नई–नई विसंगती कर रहा है। आचार्य श्री ने इस समस्या से छुटकारा पाने का एक मात्र उपाय विचार–क्रान्ति को माना है। विचार–क्रान्ति का अर्थ है– मनुष्य के दृष्टिकोण को निकृष्टता से मोड़ने की ओर अभिमुख करना। इसके लिए सबसे पहले जरूरी है–जनमानस के परिष्कार को सर्वोपरि प्राथमिकता दी जाए एवं विचार क्रान्ति पर ध्यान केंद्रित किया जाए। यदि इस प्रक्रिया में सफलता पाई जा सकती है तो आगामी संकटों का समाधान केवल एक ही उपचार से संभव हो जायेगा। समाज, परिवार और व्यक्तिगत जीवन में उत्पन्न होने वाली सभी समस्याओं का मूल कारण विचारों का पतन है, आदर्श विचार स्तर से नीचे उतरने के कारण स्वार्थ में वृद्धि, व्यक्तियों में इच्छाएँ, परिवार के सदस्यों के बीच कलह, समाज में विकृत परम्पराएँ, प्रथाएँ और अपराध होते हैं। इसके पतन से सहज ही नकारात्मकता विचारों में प्रवेश कर जाती है और फिर तरह–तरह की मानसिक परेशानियां भी उत्पन्न हो जाती हैं।

इस प्रकार उन्होंने समाज में हो रहे पतन को रोकने के लिए शिक्षा को ही सर्वोपरि माना। उन्होंने हरिद्वार में जब अपने शिक्षण संस्थान की स्थापना की, इसमें शैक्षिक मूल्यों को सर्वोपरि रखा तथा ऐसे चरित्रवान विद्यार्थी बनाने का संकल्प लिया कि उनके भीतर शिक्षा के उत्तम विकास, कल्पनाशीलता के साथ–साथ संपूर्ण मूल्य का विकास हो सके। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का मानना था कि किसी राष्ट्र की संपत्ति आदर्श चरित्र वाले महान व्यक्ति होते हैं, जो राष्ट्र की प्रगति एवं कार्यशक्ति का आधार माने जाते हैं। मानव के वैचारिक पतन ने नकारात्मक दृष्टिकोण, असंतुलित जीवन शैली और कार्यप्रणाली को नष्ट कर दिया है, इससे वातावरण में विषाक्तता और मानवता को खतरा उत्पन्न हो गया है। भारतीय एवं वैश्विक मनुष्य समुदाय में आधुनिक समय में उनकी परवरिश में विकास एवं स्वास्थ्य पर ही ध्यान दिया जाता है। उनके मानसिक, दृष्टिकोण एवं नैतिक विकास पर ध्यान न दिए जाने के कारण पीढ़ी दर पीढ़ी तरह–तरह के पहलुओं में दिशाविहीन एवं नैतिक मूल्यों से दूर हो रही है, जिसके कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने पर भी बच्चों में संस्कारों का अभाव दिखायी पड़ रहा है। क्योंकि चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में वे शालीनता, आदर्शवादिता एवं दैवी गुण से विरत हो रहे हैं, जिसका

परिणाम परिवार, समाज एवं राष्ट्र में भ्रष्ट पापाचार के रूप में आ रहा है। अतः चरित्रवान मानव के निर्माण की शिक्षा परम आवश्यक है।

निष्कर्ष–

अतः कहा जा सकता है कि आज हमारे देश भारत सहित समस्त विश्व में बढ़ती अराजकता, हिंसा, मनो–उन्माद, आतंकवाद, नशाखोरी तथा पर्यावरण क्षरण आदि समस्याओं के कारण समस्त मानव जाति को अपनी सभ्यता और संस्कृति के समक्ष अस्तित्व का संकट दिखाई दे रहा है। वास्तव में आँखें बंद रखे हुए मानव ने अपने सांस्कृतिक मूल्यों की अवहेलना करते हुए पश्चिमीकरण के रास्ते जो विकास की यात्रा तय की है, उसके कारण आज हमें अपनी सभ्यता और संस्कृति के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता प्रतीत हो रही है। विकास की इस यात्रा में मनुष्य प्रजाति ने शिक्षा प्रणाली के मानवीय आधारभूत मूल्यों की अनदेखी की।

यदि हम अपने समाज को संगठित रूप देना चाहते हैं या उसे सन्मार्ग पर लाना चाहते हैं तो ऐसी परिस्थिति में हमें स्वामी विवेकानंद एवं श्रीराम शर्मा आचार्य के शैक्षिक विचारों में वर्णित दर्शन, मूल्य शिक्षा के शरण में जाना होगा। क्योंकि भारतीय समाज एवं संगठन को ध्यान में रखते हुए हमें जिस प्रकार की शिक्षा चाहिए उसका आधार ही मूल्य शिक्षा है। जहां पर शिक्षा का प्रश्न है तो उसमें मूल्य निर्माण के गुण होने ही चाहिए। यदि मूल्य निर्माण पर गौर किया जाए तो स्वामी विवेकानंद एवं पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य दोनों के ही शिक्षा दर्शन में इसकी प्रचुरता मिलती है। हमें इन दोनों शिक्षा शास्त्रियों के सुझाए हुए मार्ग पर चल कर ही अपनी शिक्षा व्यवस्था में मूल्य को समावेशित करना होगा नहीं तो पश्चिमीकरण के इस दौर में न केवल हमारी शिक्षा व्यवस्था विकृत होगी अपितु इसका सीधा प्रभाव हमारे समाज के संरचना पर भी पड़ेगा तथा हमारा समाज भी विकृत होगा। हमें शिक्षा को मूल्यपरक बनाने के लिए इन दोनों विचारकों के शैक्षिक दर्शन के शरण में जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ–

1. अग्रवाल, जी.सी. (2010) थ्योरी एंड प्रिंसिपल्स ऑफ एजुकेशन, विकास पब्लिकेशन हाउस प्राइवेट लिमिटेड, आगरा।
2. लिंगम, अवनीश,(1983) स्वामी विवेकानंद एवं रामकृष्ण मठ, रामकृष्ण मठ प्रकाशन, नागपुर।
3. बोहरा,एस. के.(2016) मानव निर्माण में स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचार का महत्व, अद्वैत आश्रम, कोलकाता।
4. मदान, पूनम, (2014) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।

5. दास, बी.एन. (1994) फाउंडेशन ऑफ एजुकेशनल थॉट्स एंड प्रैक्टिसेज, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
6. गुप्ता,एस.पी.(2009,उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा,शिप्रा प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. अरोरा, ममता (2008) आचार्य श्रीराम शर्मा का सर्वांग शिक्षा दर्शन एवं उनके शिक्षा संबंधी प्रयोगों का मूल्याँकन (अप्रकाशित पी–एच.डी. खोज)। शनिवाररू शिक्षा विभाग, महिला प्रशिक्षण कालेज।
8. विशेष, श्रीराम शर्मा (1973)युग ने रूपरेखा और कार्यपद्धति का निर्माण किया। मथुरा युग निर्माण योजना प्रकाशन, पृ.–14
9. अंश, श्रीराम शर्मा (1990) परिवार और उसका निर्माण (द्वितीय संस्करण)। मथुराःयुग निर्माण योजना प्रकाशन, पृ.–10
10. कुमार, ए. (2006) रूरल सोशल ट्रांसफॉर्मेशनरू ए स्टडी ऑफ द इम्पैक्ट ऑफ युग निर्माण मिशन मूवमेंट (अप्रकाशित पी–एच.डी. थीसिस)। मेरठ, समाजशास्त्र विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय।
11. मुखर्जी, आर. (2006) समाज का एक सामान्य सिद्धांत। वी.एल. शर्मा और वी.के. माहेश्वरी (एड.) में। पर्यावरण और मानव मूल्यों के लिए शिक्षा। मेरठ, आर. लाल प्रकाशन, पृ.–110
12. प्लेटो (1997) कानून। आर. दुबे (संपा.) में। विश्व के कुछ महान शिक्षा शास्त्री। मेरठ मीनाक्षी प्रकाशन, पृ.–4.55

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number July-2023/07

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

रमाशंकर एवं डॉ. सन्तोष कुमार सिंह

for publication of research paper title

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्यों के विकास में स्वामी विवेकानंद एवं श्रीराम शर्मा आचार्य के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and

E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-02, Month July, Year-2023.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com